॥ नरहर्यष्टकम् ॥

ओम् ॥ यद्धितं तव भक्तानामस्माकं नृहरे हरे ।
तदाशु कार्यं कार्यज्ञ प्रळयार्कायुतप्रभ ॥ १ ॥

रटत्सटोग्रभ्रुकुटीकठोरकुटिलेक्षण ।
नृपंचास्य ज्वलज्ज्वालोज्ज्वलास्यारीन् हरे हर ॥ २ ॥

उन्नद्धकर्णविन्यास विवृतानन भीषण ।
गतदूषण मे शत्रून् हरे नरहरे हर ॥ ३ ॥

हरे शिखिशिखोद्भास्वदुरुक्रूरनखोत्कर ।
अरीन् संहर दंष्ट्रोग्रस्फुरज्जिह्व नृसिंह मे ॥ ४ ॥

जठरस्थजगज्जाल करकोत्युद्यतायुध ।
कटिकल्पतटित्कल्पवसनारीन् हरे हर ॥ ५ ॥

रक्षोध्यक्षबृहद्वक्षोरूक्षकुक्षिविदारण ।
नरहर्यक्ष मे शत्रुपक्षकक्षं हरे दह ॥ ६ ॥

विधिमारुतशर्वेंद्रपूर्वगीर्वाणपुंगवैः ।
सदा नतांघ्रिद्वंद्वारीन् नरसिंह हरे हर ॥ ७ ॥

भयंकरोर्वलंकार वरहुंकारगर्जित ।
हरे नरहरे शत्रून्मम संहर संहर ॥ ८ ॥

वादिराजयतिप्रोक्तं नरहर्यष्टकं नवम् ।
पठन्नृसिंहकृपया रिपून् संहरति क्षणात् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचितं नरहर्यष्टकं संपूर्णम् ॥

Collection by M. Pramod